Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
Mathurapur, Samastipur

Recognized by ERC, NCTE, Bhubaneswar
Affiliated to L. N. Mithila University, Darbhanga

Assignment

Course Code: COURSE-2

Course Title: CONTEMPORARY INDIA AND EDUCATION

Session: 2022-24

19/20

Submitted By:

Roll Number: 220032
Name: TUNJI PRAKASH
Class: B.Ed PART ONE
Uni. /BSEB Roll (If):
Year: 2023
Section: A

1. Explain the Provisions of Education in India Constitution in details.

भारतीय संविधान में शिक्षा संबंधी प्रावधानों का विस्तार से वर्णन करें।

2. What is quality education? How quality environment is helpful for students Education

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा क्या है? गुणवत्तापूर्ण वातावरण छात्रों की शिक्षा में किस प्रकार सहायक है?

राज्य सूची (State List)

राज्य सूची में क्षेत्रीय महत्व पर विशेष ध्यान दिया गया है। इनमें उन विषयों को शामिल किया गया जो क्षेत्रीय महत्व रखते हैं। इन विषयों पर कानून बनाने का अधिकार राज्य विधानमंडल को प्रदान किया गया है।

वर्तमान समय में राज्य सूची में 61 विषयों को सम्मिलित किया गया है जैसे कि न्याया--यालय, राज्य पुलिस, जिला अस्पताल, सफाई, पशु, सिंचाई कृषि सड़क, वन, रेलवे पुलिस, वन, बाँट एवं नाप इत्यादि।

समवर्ती सूची (Concurrent List)

समवर्ती सूची में सम्मिलित किये गए विषयों पर राज्य सरकार और केन्द्र सरकार दोनों कानून का निर्माण कर सकती है। केन्द्र सरकार द्वारा बनाये गए कानून को राज्य सरकार द्वारा आनिवार्य रूप से स्वीकार किया जाता है।

समवर्ती सूची के अंतर्गत कुल 52 विषयों को सम्मिलित किया गया है जैसे शिक्षा, दीवानी एवं फौजदारी मुकदमे, श्रम कल्याण, कारखाने, समाचार पत्र, वन, आर्थिक एवं सामाजिक नियोजन, प्रदूषण नियंत्रण, परिवार नि--योजन, बाँट माप इत्यादि।

प्रारंभ में शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य सरकार के पास था। केन्द्रीय सरकार का उत्तरदायित्व संघी--य क्षेत्रों में शिक्षा की व्यवस्था करना, कुछ राष्ट्रीय महत्व की शिक्षा संस्था की व्यवस्था करना और तकनीकी एवं उच्च शिक्षा के स्तर को बनाये रखने में था।

42 वें संविधान संशोधन के द्वारा शिक्षा को समवर्ती सूची में शामिल किया गया तब से केन्द्र और राज्य सरकार का संयुक्त दायित्व है। वर्तमान में केन्द्र सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण करने तथा पूरे देश में समान्य शिक्षा सुविधाओं में समन्वय स्थापित करने, उच्च शिक्षा के स्तर को बनाये रखने, राष्ट्रीय महत्व की भावाओं का विकास करने और राष्ट्रीय महत्व के उच्च शिक्षा संस्थाओं और शोध संस्थाओं की व्यवस्था करने के लिए उत्तरदायी है और प्रां-तीय सरकारे राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप अपने-अपने क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा और खास कर के प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक योजना चलाई गई।

माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में central sch-ool, नवोदय विद्यालय की व्यवस्था की जा रही है तथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में central university एवं उच्च वै-ज्ञानीक एवं तकनीकि संस्थाओ का संचालन भी कर रहे हैं। साथ ही प्रांतो में किसी भी स्तर और किसी भी प्रकार के शिक्षा की व्यवस्था के लिए आर्थिक शिक्षा प्रदान करती है।

भारतीय संविधान में शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण प्रावधान निम्नलिखित हैः—

I. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा :-

संविधान के अनुच्छेद 45 में यह घोषणा की गई है "6 वर्ष से कम आयु के बच्चों को स्वास्थ्य का ध्यान रखना तथा 6-14 वर्ष के आयु के बच्चो का निःशुल्क शिक्षा देना सरकार की जिम्मेदारी है।"

संविधान के Art 21(क) के अंतर्गत शिक्षा का अधिकार एक आवश्यक तथा राज्य के सभी 6-14 वर्ष के बच्चो की निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगी जो राज्य के नियमावली के अनुसार होगी। Art 21 में कहा गया है किसी भी व्यक्ति के प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता से विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार ही वंचित किया जा सकता है।

Art 41 का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि राज्य अपनी सीमाओं के अंतर्गत शिक्षा की प्रभावी व्यवस्था करने के लिए संवैधानिक दृष्टि से बाध्य है भारतीय संविधान के Art 19 में बोलने की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा व्यवसाय करने के अधिकार दिए गए है जो परोक्ष रूप से शिक्षा के अधिकार की ओर संकेत करते है।

II १. अल्पसंख्यकों की शिक्षा :-

भारतीय संविधान में अल्पसंख्यकों की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए विशेष व्यवस्था की गई है. Art 30(1) और (2) के अनुसार धर्म या भाषा के आधार पर अल्पसंख्यक समुदाय अपने पसंद की शिक्षा संस्थाएँ स्थापित कर सकता है। राज्य सरकार अनुदान देते समय इन संस्था-ओ के साथ इसीलिए भेदभाव नही करेगी की संस्थाएँ अल्पसंख्यको के द्वारा विशेष नियमो से चलाई जा रही है इस प्रकार भारतीय संविधान अल्पसंख्यको के शिक्षा की हितो की रक्षा करती है।

"दर्जनो भाषा, सैकड़ो विधि, हजारो विधान है।
जो जोड़कर सबको साथ रखे, वो संविधान है।"

iii). धार्मिक शिक्षा की स्वतंत्रता :-

अनु 28 के अंतर्गत भारतीय संविधान में सभी धर्मों के लिए शिक्षा की व्यवस्था की गई है। अनु 28 के अंतर्गत बताया गया है कि भारत में रहने वाले सभी धर्म के लोगों को उनके धर्म की शिक्षा की स्वतंत्रता दी जाती है तथा धर्म कि शिक्षा के संस्थाएँ स्थापित करने के लिए भी स्वतंत्रता प्रदान की जाती है।

iv). समान शैक्षिक अधिकार :-

प्रजातंत्र में जाति, धर्म या स्तर की प्रवाह किये बगैर सबको अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करने के लिए समान अवसर प्रदान किया जाता है। प्रजातंत्र की इस मूल भूत मान्यताओ को ध्यान में रखते हुए संविधान के अनु 29 में सभी के शैक्षिक अधिकारो को सुनिश्चित किया गया है।

v). अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति एवं कमजोर वर्गो की शिक्षा :-

अनु 46 के तहत समाज के सभी कमजोर वर्गो की शैक्षिक उन्नती राज्य का है। संविधान के अनु 46 के अंतर्गत कहा गया है कि राज्य के कमजोर वर्गो के विशेषकर अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति की शैक्षिक तथा आर्थिक उन्नती का विशेष रूप से प्रोत्साहित करेगा। साथ ही साथ उनको सामाजिक अन्याय से बचाया। इस प्रकार संविधान के सभी वर्गों की शिक्षा व उन्नती के अवसर सुनिश्चित किये गये है।

"भारत देश का जो संविधान है,
हर भारतवासी का अभिमान है।"

VI) स्त्रियों, बच्चों तथा पिछड़े वर्गों की शिक्षा :-

अनु. 15 (3, 4, 5) में महिलाओं तथा सामाजिक शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के लिए विशेष प्रावधान बनाने पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगाया गया है। अनु 15(1) में लिंग जाति के आधार पर रोक लगाई गई है परंतु अनु 15 (3, 4, 5) में महिलाओं बच्चों तथा सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के लिए विशेष प्रावधान करने पर कोई रोक नहीं है।

VII) माता-पिता व संरक्षकों का मूल कर्तव्य :-

संविधान के 42वें संविधान द्वारा नागरिकों के मूल कर्तव्यों का भी निर्धारण किया गया है। सन् 2002 के 46वें संविधान के संशोधन उपरांत अनु 51(क) प्रत्येक माता-पिता व संरक्षक के लिए 6-14 वर्ष तक की बच्चों की शिक्षा व्यवस्था करवाना आवश्यक कर्तव्य माना गया है।

VIII) केन्द्र और राज्य हेतु शिक्षा सम्बंधी अधिकार :-

संविधान के अनु 246 से केन्द्र और राज्य सरकार के क्षेत्र को स्पष्ट विभाजित किया गया है। इसीलिए संविधान की सातवीं अनुसूचियों में तीन सूचियाँ बनाई गई हैं।

- केन्द्र सूची
- राज्य सूची
- समवर्ती सूची

उपर्युक्त व्याख्या के अनुसार भारत के संविधान में शिक्षा एवं मानव विकास के लिए जिस प्रकार की व्यवस्था की गई है तथा प्रजातंत्र एवं विश्व बंधुता का जो संदेश प्रदान किया गया है वह इसे विश्व का सबसे महान संविधान बनाता है।

Q.2. What is quality education? How quality environment is helpful for students education?

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा क्या है? गुणवत्तापूर्ण वातावरण छात्रों की शिक्षा में किस प्रकार सहायक है?

Ans :-

इसका तात्पर्य व्यक्ति और समाज की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी होना अथवा प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्राप्ति का अधिकार दिलाना है। गुणवत्तायुक्त शिक्षा हेतु दो सैद्धान्तिक विशेषताओं का होना आवश्यक है।

I. सीखने वाले को संज्ञानात्मक विकास को लक्ष्य बनाना हर शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य होना चाहिए और इस पर बल देना चाहिए।

II. इस बात पर बल देता है कि शिक्षा की भूमिका का निर्धारण उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिकों में मूल्यों, अभिवृद्धि का विकास और उसके सृजनात्मक और संवेगात्मक विकास पर बल देने के संदर्भ में होना चाहिए।

क्योंकि शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया द्वारा पाठ्यक्रम को गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सकता है। जिससे कक्षा में क्या पढ़ाया गया है। इसके गुणवत्ता का निर्धारण होती है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु कुछ आयाम निम्नलिखित है :-

1. **आकलन (Assessment) :-**

शिक्षा व्यवस्था का निरंतर आकलन से शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर सुधारने में मदद मिलती है। वे देश जो अपने शिक्षा व्यवस्था का स्तर बनाए रखना नहीं चाहते उन्हे उनकी उद्देश्यों को प्राप्त करने में या सुधार करने में कठिनाई होती है।

2. स्वायत्तता (Autonomy) :-

स्कूलों में सुधार हेतु गुणवत्ता सुधार आवश्यक है। इसका तात्पर्य विद्यालयों को संसाधनों के उपयोग हेतु स्वायत्तता देने से है ताकि वे अपनी विद्यालय को तरीके पूर्ण ढंग से सुधार सकें। स्वायत्तता की शक्ति इस बात पर निर्भर करती है कि क्या शिक्षा व्यवस्था को बदलने हेतु बढ़ती हुई स्वयत्तता के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण निर्वाह में भी वृद्धि हो रही है। यदि सही दिशा में स्वायत्तता प्रदान की जाना चाहिए।

3. जबाबदेही (Responsibility) :-

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि स्वायत्तता और उत्तरदायित्व एक दूसरे से सम्बंधित है। जवाबदेही कार्य एक दूसरे से सम्बंधित है। जवा--बदेही कार्य शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। इसके अंतर्गत अच्छी शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व स्थानीय अधिकारियों, विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षक और छात्रों की सामुदायिक सहभागिता पर निर्भर कर दिया जाता है।

4. शिक्षक पर ध्यान (Attention to Teacher) :-

विश्व स्तरीय अध्ययन यह बताते हैं कि एक अच्छा शिक्षक अधिगम प्रक्रिया में मूल्यों को भी शामिल कर लेता है। छात्रों को अधिगम परिणामों को प्रभावी बनाता है। छात्रों के अच्छे परिणाम दिखाने वाले विद्यालय शिक्षकों का चुनाव भी कई स्तरों पर करती है। प्रभावी शिक्षण हेतु आवश्यक कौशल और प्रतिभाएं क्या हैं और सेवाकालिन प्रशिक्षण शिक्षक

को अपने कौशलों को बनाए रखने में मदद करती है अतः वे शिक्षक की शिक्षण प्रभाविता को बढ़ाने हेतु सभी उपायों पर ध्यान देते हैं।

5. संस्कृति पर ध्यान :-

संस्कृति गुणवत्ता शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है परंतु इसे अक्सर नजर अंदाज किया जाता है। पाठ्यक्रम की भाषा के रूप में मातृभाषा का प्रयोग कई देशों में विवादित विषय रहा है। शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में पाया कि वे विद्यालय जो छात्रों के अधिगम हेतु मातृभाषा का प्रयोग करते हैं।

वहाँ छात्रों की उपस्थिति प्रतिशत और विकास दर अधिक होती है और अवरोधन में कमी आती है। छात्र अपनी मातृभाषा द्वारा ही बेहतर सीख सकते हैं अतः पहले उन्हें अपनी मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए और तत्पश्चात् राष्ट्रीय भाषा का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचना के संदर्भ में गुणवत्तायुक्त शिक्षा का व्यवहारिक अर्थ है बच्चों द्वारा बौद्धिक, संज्ञानात्मक, भावात्मक क्षेत्र की विभिन्न दक्षताओं को अर्जित करना। बच्चों की अधिगम प्राप्ति के रूप में निम्नलिखित दक्षताएँ हो सकती हैं:-

I) बच्चे विश्लेषणात्मक शैली में पढ़ना और लिखना सीख जाते हैं।

II) उनमें तार्किक क्षमताये विकसित हो जाती हैं।

III) उनमें जीवन की यथार्थ परिस्थितियों में ज्ञान का प्रयोग करना सीख जाते हैं।

गुणवत्ता युक्त शिक्षा की रूप रेखा निम्नांकित क्षेत्रों में विभा-
-जित की जाती है :-

I. भौतिक संसाधन
II. प्रक्रिया
III. मानव संसाधन
IV. विषय वस्तु
V. तकनीक

गुणवत्ता युक्त शिक्षा के उपर्युक्त पांच स्तम्भों पर आधारित समग्र एवम् व्यापक गतिविधियों से युक्त एवं योजना बनाने की आवश्यकता है इससे शिक्षा अध्यापक केन्द्रित होने के स्थान पर बाल केन्द्रित एवं गतिविधि आधारित हो ताकि बच्चों की शिक्षा तनाव युक्त वातावरण में होनी चाहिए।

1st Cycle

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College

Mathurapur, Samastipur

Recognized by ERC, NCTE, Bhubaneswar
Affiliated to L. N. Mithila University, Darbhanga

Assignment

Course Code: 4

Course Title: LANGUAGE ACROSS THE CURRICULUM

Session: 2022-24

09/10

Submitted By:

Roll Number: 220087
Name: GAURAV KUMAR SINGH
Class: B.Ed PART ONE
Uni. /BSEB Roll (If):
Year: 2023
Section: A

Date of Submission: 20/4/23

Signature of Teacher/ In charge: 12/6/23

1. बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? पियाजे के विशेष सन्दर्भ से स्पष्ट करें।

2. भारतीय संविधान में भाषा का क्या प्रावधान है?

Q1. How children learn language with special reference to piaget?

बच्चे भाषा कैसे सिखते है? पियेज के विशेष संदर्भ से स्पष्ट करें?

Ans → जीन पियाजे का मानना है, कि मानसिक विकास में जन्मजात कारकों की भूमिका नही होता। विकास का कारण है, जीव और वातावरण के बीच अंतः क्रिया इसका एक निहितार्थ यह है कि जिस प्रकार उसकी भाषा बच्चा - बच्ची वातावरण के संपर्क में आता है। और उसका विकास क्रमशः होता है उसी प्रकार उसकी भाषा का भी होता है। जैसे - जैसे बच्चा वातावरण के सम्पर्क में आता है अथवा वातावरण से अंतः क्रिया करता है; वैसे - वैसे उसकी मानसिक संरचनाओं में गुणात्मक बदलाव आता है।

जीन पियाजे के अनुसार सीखने के संदर्भ में आत्मसातीकरण (Assimitation) और समायोजन (Accommodation) की प्रक्रिया महत्वपुर्ण होती है उदाहरण —

एक बच्चा अपनी माँ के साथ बाजार आता है। वहाँ वह एक गाय देखता है। और उसकी माँ उस गाय की ओर संकेत कर कहती है। देखो गाय

आ गई। बच्चा गाय की छवी को उसके नाम के ध्वनि। आवाज संयोजित कर लेता है। यानि बच्चे को बौद्धिक संरचना में गाय की छवि को उसके नाम के गाती आवाज संयोजित कर लेता है। यानि बच्चो को बौद्धिक संरचना में गाय की छवि और ध्वनि अपत स्थान ले लेती है। पियाजे के अनुसार यह छवि अपना स्कीमा (Schema) कहलाती है।

"Play is the answer to how anything new comes about."

—Jean Piaget.

बच्चा अपनी बौद्धिक संरचना के आधार पर उसे आत्मसात (Assimitate) करता है। अब बच्चा कुत्ता, बैल, बिल्ली आदि देखता है। और उसे गाय कहकर सम्बोधित करता है। यह समाजन्यीकरण की प्रवृति है। बच्चे ने गाय और शेष जानवरों में संभवत: पैरों के आधार पर समान्यीकरण किया। लेकिन जब अलग-अलग समय पर बच्चे के समझ उन जानवरों को अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है, तो बच्चा पूर्व में बनाई गई छवि में परिवर्तण करता है।

इस परिवर्तण के आधार पर वह गाय, कुत्ता, बैल अनेक साथ क्रमश: अनेक नामों, ध्वनियाँ, शब्दों को

जोड़ता है। इतना ही नहीं वह धीरे-धीरे समय के बढ़ते क्रम में अलग-अलग तरह की गायों (सफेद, काली, भुरी, चितकड़ी) में भी अंतर करने लगता है। और उसी के अनुरूप शब्दों का प्रयोग करता है। और उसी के अनुरूप यह समायोजन (Accommodation) की स्थिति है।

पियाजे के संदर्भ में यह स्वीकार किया गया है, कि दो समाज की उम्र से बच्चे की बौद्धिक संरचना के सांकेतिक कार्य (symbolic-function) के अनुसार महत्वपुर्ण परिवर्तन होने लगता है। बच्चा मानसिक छवियाँ तथा सांकेतिक भंगिमा (symbolic gesture) बनाने के साथ-साथ भाषा का उपयोग करना सिखने लगता है।

" बच्चों को उन्हीं चीजों के बारें में सच्ची जानकारी होती है। जिन्हे वे खुद सिखते है। जब कभी हम समय से पहले उन्हे कुछ सिखाने की कोशिश करते है, उन्हे खुद सिखने का मौका नही देते।"

सांकेतिक कार्य मानसिक छविया बनाने, खेलने, चित्र बनाने तथा भाषा का उपयोग करने में प्रकट होते है। इस उम्र से पहले भी बच्चा शब्दों का उपयोग करता है। लेकिन शब्दों कों संकेत के रूप में

उपयोग करता है, तथा उससे संम्बधित स्कीम का विकास दो साल की उम्र से शुरू होता है। इस उम्र में वह ऐसे वाक्य बनाने लगता है जिनमें एक से ज्यादा शब्दों का उपयोग होता है।

वह व्याकरणिय नियमों को भी समझने लगता है कि अब बच्चा इंडिया क्रियाओं से परे आकर उन पर बात कर सकता है। व्यवहार करने के लिए उसे वातावरण के तात्कालीक पक्ष तक सिमित नही रहना पड़ता। भाषा की वजह से उसके दिक तथा काल (Time and Space) भी सीमाओं का विस्तार होता है।

अब उसके पास ऐसे स्कीमाज होते है, जो उसे इस समय तथा इस स्थान पर मौजुद घटनाओं को ध्यान में रखकर व्यवहार करने में भी समझ बनाते है। भाषा का उपयोग समाजिक जीवन को विस्तार देने तथा उसके प्रतिकीकरण हेतु किया जाने लगता है। भाषा के विकास के संदर्भ में (Piaget Stage) से पहले तक भाषा तमाम सांकेतिक कार्यो (Symbolic function) के साथ मिलकर काम करती है।

इस अवस्था से पहले क्रियाओं के कारण भाषा का विकास होता है। जब बच्चा वस्तुओं तथा घटनाओं का रूपांतरण करके उन्हें आत्मसात किये जा सकने वाले रूप में ढालता है, तो इस प्रक्रिया उसकी भाषा विकसित होती है। इसे ढालने की प्रक्रिया को piaget operating Knowing कहते है।

Q2. What is the provision of Language in Indian Constructions?

भारतीय संविधान में भाषा का क्या प्रवधान है?

Ans → स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में अनेक जाती, धर्म के कारण भारतीय संविधान में भाषा के शिक्षा के लिए भाषा की निति का निर्माण किया गया जो भारतीय संविधान के भाग - 17 में उल्लिखित अनुच्छेद 343-351 में राज्यसभा संबंधि प्रवधानों है। अनुच्छेद 343-351 में राज्यभाषा से संबंधित उपबंधों को 4 अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है, जो निम्न प्रकार से है :-

अध्याय 1- संघ की भाषा

अनुच्छेद 343 :- संघ की भाषा

अनुच्छेद 344 :- राज्यभाषा के संबंध में उपयोग और संसदीय समिति।

अध्याय 2 के प्रादेशिक भाषाएँ

अनुच्छेद 345 :- राज्य की राज्यभाषा या राज्यभाषाएं

अनुच्छेद 346 :- एक राज्य से दुसरे राज्य अथवा राज्य एवं संघ के बीच पत्रादि के लिए राज्यभाषा।

अनुच्छेद 347 :- किसी राज्य की जनसंख्या के एक समूह द्वारा बोली जाने वाली भाषा से संबंधित विशेष उपबंध।

"If I find the Constitution being misused. I shall be the first to burn it."
— Dr. B.R Ambedkar.

अध्याय 3- उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा

अनुच्छेद 348 :- उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायलयों में और अधिनियमों विधायकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 349 :- भाषा से संबंधित कुछ नियम अधिनियमित करने की विशेष प्रक्रिया।

अध्याय 4- भाषा संबंधी विशेष निर्देश

अनुच्छेद 350 :- शिकायत निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयुक्त भाषा।

अनुच्छेद 350 क :- प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षण के लिए सुविधाएँ,

अनुच्छेद 350 ख :- भाषायी अल्पसंख्यकों के लिए विशेष पदाधिकारी।

अनुच्छेद 351 :- हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश।

उपर्युक्त संवैधानिक अध्याय में भाषा के किस रूप में लागु की जाएँ इसका विस्तारीकरण इन भाषाओं के अध्यायों के अंतर्गत किया गया है। जिनमें विशेष रूप से वर्णित है। संविधान में अनुच्छेद 343-351 तक हिन्दी के राज्यभाषा रूप का विश्लेषण किया गया है। यानि प्रशासनिक भाषा के स्वरूपों पर संविधान अपना रुख स्पष्ट करता है। एक ऐसे देश में जहाँ अनेक भाषा परिवारों की भाषा बोलने वाले के बीच स्वभाविक अनतंत्र है, वहाँ संविधान इस बात के लिए खास तौर पर संचेत रहा कि भाषाओं के नाम पर घमसान न मचे। भारतीय संविधान ने इस बात को सुनीश्चित किया कि विभिन्न भाषाओं को समुचित स्थान मिले।

इसी संदर्भ में आठवी अनुसुची की व्यवस्था की गई। भारतीय संविधान ने विभिन्न भाषाओं की अस्मिता को स्वीकार करते हुए आठवी अनुसुची का प्रवधान को किया संविधान की आठवी अनुसुची में 1950 में 14 भाषायाल मराठी ओडिया, पंजाबी, संस्कृतिक

तामिल, तेलगु और उर्दू।

इस सुचि में 21वे संविधान संशोधन में सिंधि भाषा को जोड़ा। इसी तरह 71वे संविधान संशोधन द्वारा कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली तथा 92वे संविधान संशोधन द्वारा बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी भाषाओं को भी इस सुचि में स्थान दिया गया। इस तरह फिलहाल संविधान में कुल 22 भाषाएँ शामिल है। इसके अतिरिक्त कई राज्य अपनी भाषाओं को इस सुची में शामिल कराने की कोशिश कर रहे है। यह सुचि भाषाओं की संख्या पर रोक नही लगाती।

भारतीय संविधान की अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार भारत की राज्यभाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी होगी अनुच्छेद 343 ख के अनुसार अंग्रेजी को सह-राज्यभाषा का दर्जा दिया गया। अंग्रेजी को यह दर्जा शुरुआत में 15 वर्षो का दिया गया था। अनुच्छेद 345 के अनुसार राज्यों को अधिकृति किया भाषा कि वे विधि द्वारा उस राज्य में प्रयोग शब्द निर्माण के लिए स्त्रोत के रूप में आधार भाषा संस्कृतिक

को महत्व दिया जाता है। लेकिन भारतीय संविधान इस बात को लेकर खास तौर पर सचेत रहा कि हिन्दी भाषा कहीं किसी विशेष स्रोत भाषा की प्रतिकृति मात्र न रह जाएँ।

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
Mathurapur, Samastipur
Recognized by ERC, NCTE, Bhubaneswar
Affiliated to L. N. Mithila University, Darbhanga

Assignment

Course Code: I

Course Title: CHILDHOOD & GROWING UP

Session: 2022-2024

19/20

Submitted By:

Roll Number: 220074
Name: ANSHU PRIYA
Class: B.Ed-I
Uni. /BSEB Roll (If):
Year:
Section: "B"

12.6.23

Date of Submission: 19/04/2023

Signature of Teacher/ In charge:

Course-1 Childhood and Growing up

1. What is the meaning of gifted Children? How identity gifted Children ?

2. What Naturalistic observation? Discuss the limitations of naturalistic observation.

The gifted children loose their talent when they are bound to pace with the normal school curricular programmes. Due to their special abilities they show significant achievements in learning rate, reading aspect.

The gifted children show their progress when they work with the children of high I.Q and intellectual superior children most of the gifted children are victimized in the age old system of education system, Chronological age grouping and traditional examination pattern.

Definitions of Giftedness :-

"The term gifted has been applied to every child who in his group is superior in some ability which may makes him an outstanding contribution to the welfare and quality living in our society." — H. B. Kolesnik

"Gifted Children are those individuals form kindergarten through high school age who show unusual promise in some socially useful area and whose talent might be stimulated." — R.J. Having Hurst

Types of gifted children :-

(i) The highly gifted child
(ii) The under achieving gifted child
(iii) The gifted child with a handicap.

Characteristics of gifted children :-

(i) Intellectual abilities
(ii) Physical Characteristics
(iii) Personality traits
(iv) Academic achievements.

Identification of the gifted children :-

The gifted children are the brain of the society, whose contributions

are hardnessed for its prosperity and progress. The tremendous social, cultural, financial and scientific achievements occur due to their sincere efforts and innovations. So, it is the responsibility of a country to identify the gifted children in their early school stage and plan special system of education for them. It has been presumed that the gifted children have their I.Q. ranging from 130 and above.

According to normal distributions they are top percent of the student population. The criterion is quite arbitrary. Others suggest that gifted children posses I.Q. of 140 or higher than that. If it is taken at I.Q of 140 they are the top 1% of the students population.

(i) Intelligence test

(ii) Aptitude test

(iii) Achievement test

(iv) Views of Parents

(v) observation of teachers

(vi) Personality tests

(vii) Remarks of classmates and companions

(i) Intelligence tests :—

The first means by which the gifted children are identified is mental tests like intelligence tests. A mentally gifted child scores high in intelligence tests. The gifted are mentally alert and quick. These tests are most effective single instrument.

(ii) Aptitude tests :—

The gifted children have certain special abilities which are not identified by intelligence tests. For example those who are gifted, they show outstanding Proficiency in art, drama, music and other non-academic areas. To measure these qualities aptitude test may be used.

(iii) Achievement tests :-

Experienced and skilled teachers may used standardized achievement tests for identifying the children with superior academic abilities.

(iv) Views of Parents :-

While parents are likely to be biased in establishing the intelligence of their children, their views are often of considerable value in identifying gifted children.

(v) Observation of teachers :-

The teacher takes an excellent position to observe the child and evaluate his performance. When the teachers is given the responsibility for making this kind of decision, he should use an objective criterion of evaluation as much as possible.

(vi) Personality tests :—

Some gifted children are introvert and some are extrovert. Very often the potentially of the introvert are not duly recognised. Through perso-nality tests the talents of the gifted may be taken into consideration.

(vii) Remarks of Classmates and Companions :—

Friends and classmates Comment the unusual behaviour of the gifted. Although varied symptoms of the gifted are not appreciated by the peers, the teachers should wisely go through these remark to identify the giftedness.

(10)

Naturalistic observation

Naturalistic observation is a research method used in psychology and other Social Sciences in which research participants are observed in their natural environments. Unlike lab experiments that involve testing hypotheses and controlling variables, naturalistic observation simply requires recording what is observed in a specific setting.

- Naturalistic observation is a research method in which people or other subjects are observed in their natural setting.
- Psychologists and other social scientists are use naturalistic observation to study specific social or cultural settings that couldn't be investigated in other ways, such as prisons, bars, and hospitals.
- Naturalistic observation has some drawbacks, including the inability to control

for Variables and a lack of replicability

Naturalistic Observation Applications

Naturalistic observation involves observing subjects of interest in their normal, everyday setting. It is sometimes reffered to as field work because it requires researcher to go out into the field to collect data on their participants. Naturalistic observation traces its roots back to anthropologist and animal behavior research. For example, cultural anthropologist Margaret Mead used naturalistic observation to study the daily lives of different groups in the South pacific.

The approach doesn't always require researchers to observe people in such exotic environments, however, it can be conducted in any kind of social or organizational settings, including offices schools, bars, prisons, dorm room,

online message boards, or just about any other place where people can be observed. For example, psychologist Sylvia Scribner used naturalistic observation to investigate how people make decisions in various professions. To do so, she accompanied people from milk men, to chashiers, to machine operators- as they went about their regular work routines.

Naturalistic observation is valuable when a researcher wants to learn more about people in a specific social or cultural settings but can't gather the information any other way. Sometimes studying people in a lab can impact their behaviours, be cost prohibitive, or both. Naturalistic observation offers the opportunity to observe shopper's behaviours and based on researcher's, observation of

Situation, has the potential to generate new ideas for specific hypotheses or avenues of research.

The methods requires researchers to immerse themselves in the setting being studied. This typically involves taking copious field notes. Researchers may also interview specific people involved in the situation, collect documents from the setting, and make audio or video recording

Naturalistic observation is a method of research that is often used by social scientists and psychologists. It used a technique which involves the observation of subjects while they remain in their natural environment. This process makes it possible to conduct research in situation where being in a laboratory is either cost-prohibitive, unrealistic, or could influence the behaviour of the individuals involved

in the Study.

People do not always behave the Same way when they are in a lab Setting compared to how they are in their natural Settings. When Specific behaviours require tracking, then the only way to observe them involves watching how decisions are made under Specific Situation and Stimuli in real - life settings. This Process makes it possible for Social Scientists to understand how people react. It differs from Structured observation because it looks at a behaviours as it happens in a natural Setting without an attempting to intervene on the part of the researcher.

The pros of naturalistic observation

- It allows researchers to directly observe individuals in their natural Setting.

- It gives Scientists a first-hand look at Social Behaviours.

- It allows researchers to Study ideas that cannot be manipulated otherwise.

- It helps to Support the external Validity of a research effort.

- It allows for multiple methods of data collection.

- It offers different windows for data collection without affecting results.

- It creates the potential for more genuine reactions.

- It can be Safer for the researchers when compared to other methods.

The cons of Naturalistic observation

- It can be challenging to control for outside Variables.

- It does not always generate accurate data.
- It may cause conformity concerns with the collected data.
- It creates informations that can sometimes be subjective.
- It takes more time to complete naturalistic observations.
- It cannot account for potential distractions in the environment.
- It offers information that can have limited usefulness.

It cannot account for observer bias.

Thus, this process can lead to insights that may help individuals overcome problems, eventually leading to a life that is happier and healthier than it was before.

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
Mathurapur, Samastipur

Recognized by ERC, NCTE, Bhubaneswar

Affiliated to L. N. Mithila University, Darbhanga

1st Cycle

Assignment

Course Code: COURSE-5

Course Title: UNDERSTANDING DISCIPLINES AND SUBJECTS

Session: 2022-24

Submitted By:

9/10

Roll Number: 220032

Name: TUNJI PRAKASH

Class: B.Ed PART ONE

Uni. /BSEB Roll (If): ________

Year: 2023

Section: A

Date of Submission: 19-04-2023

Signature of Teacher/ In charge: [signature] 11/6/23

1. What are the benefits of Information Communication technology in school.

सूचना सम्प्रेषण तकनीकी से विद्यालय में क्या लाभ है?

2. Define Research and describe the utility and limitation of observation method.

शोध को परिभाषित करें एवं प्रेक्षण विधि की उपयोगिता एवं परिसीमाएँ बतायें।

Q.1. What are the benefits of information co-mmunication technology in school.

सूचना सम्प्रेषण तकनीकी से विद्यालय में क्या लाभ है?

Ans:-

सूचना सम्प्रेषण तकनीकी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। IT संगठनों को और अधिक कुशलता से काम करने तथा उत्पादकता को अधिकतम करने की अनुमति देकर व्यापारिक दुनिया को लाभ पहुंचाता है। व्यापार के अतिरिक्त बैंकिंग, ट्रांसपोर्ट, मेडिसिन, स्वास्थ्य सेवाओं, कानूनी सेवाओं इत्यादि प्रत्येक क्षेत्र में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी का विशेष योगदान है।

शिक्षा के क्षेत्र में ICT के उपयोग तीव्रता से सीखने की प्रक्रियाओं में सुधार किया है। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहाँ ICT का उपयोग न किया जाता हो। अतः सूचना एवं सम्प्रेषण के निम्नलिखित लाभ है :-

i) **सीखने के संसाधनों की विविधता का उपयोग :-**

ICT शिक्षण कौशल और सीखने की क्षमता को बढ़ाने के लिए संसाधनों के निर्माण में बहुत मदद करता है। सूचना सम्प्रेषण तकनीक की सहायता से अब श्रव्य-दृश्य माध्यम से शिक्षा प्रदान करना आसान हो गया है और विद्यार्थियों को कम्प्यूटर प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर छात्रों को सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के माध्यम से अनुदेशन प्रदान किया जा सकता है।

ii). जानकारी के लिए तात्कालिकता :-

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी ने नवीनतम विधियों के द्वारा ज्ञान प्रदान करने की गति को बहुत तेज किया है, अतः कम्प्यूटर एवं नेटवर्क के माध्यम से कहीं पर किसी भी समय शिक्षण किया जा सकता है। तात्कालिक जानकारी के आधार पर आधुनिक युग में शिक्षण प्रदान करके नव-युवकों को परम्परागत तकनीकों की सहायता से आने वाले परिवर्तनों के लिए तैयार किया जा सकता है। जबकि सूचना सम्प्रेषण तकनीकी का समुचित प्रयोग इस दिशा में सहायक सिद्ध हो रहा है।

iii). व्यक्तिगत विकास के लिए उपयोगी :-

सूचना सम्प्रेषण तकनीकी के माध्यम से विद्यार्थी नवीन सूचनाओं का प्रयोग करके अपना व्यक्तिगत विकास कर सकते हैं और अपनी आवश्यकता, गति एवं रुचि के अनुसार स्व-अनुदेशन प्राप्त कर सकते हैं। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकों से विद्यार्थी में समस्या समाधान योग्यता, निर्णय क्षमता का भी विकास होता है और विद्यार्थियों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन भी लाया जा सकता है।

iv). शिक्षकों के लिए उपयोगी :-

उपर्युक्त शिक्षण के लिए विभिन्न प्रकार की सूचनाएं ज्ञान और आँकड़ों की आवश्यकता होती है। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी शिक्षकों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सहायता प्रदान करता है। इन्हें उचित प्रकार से प्राप्त करने में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी शिक्षक की सहायता करती है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ज्ञान और सूचना के स्रोतों की जानकारी देकर अपने कार्यभार को कम कर

कर देते हैं तथा प्रकरण का अभ्यास कराने के लिए भी इनका उपयोग किया जा सकता है।

v8. **विद्यार्थियों के लिए उपयोगी :-**

सूचना सम्प्रेषण तकनीकी से विद्यार्थी अपने सीमित ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं। वे न केवल सूचनाओं को इकट्ठा करके सही समय पर उसका उपयोग कर सकते हैं। अपितु विद्यार्थियों में समस्या समाधान व निर्णय क्षमता का भी विकास होता है। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के अनुसार सीखने के सिद्धांत का ज्ञान कराती है। इससे विद्यार्थियों के रचनात्मक एवं सृजनात्मक चिन्तन का विकास होता है।

vi8. **शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग का ज्ञान:-**

शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग की प्रक्रिया शिक्षकों की व्यावसायिक उन्नति का सूचक है। वर्तमान समय में प्रत्येक शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के माध्यम से शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण की उचित विधियों एव प्रयोग की जानेवाली सावधानियों का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे कि शिक्षक का शिक्षण कुशल, प्रभावी व उपयोगी बन सके।

vii8. **शिक्षक प्रशिक्षण में सहायक :-**

शिक्षकों के विकास के लिए एवं शिक्षण को कुशल एवं प्रभावपूर्ण बनाने में सूचना सम्प्रेषण बहुत सहायक है। इसके लिए शिक्षण अभ्यास प्रतिमानों की रचना, सूक्ष्म शिक्षण, अनुकरणीय शिक्षण एवं प्रणाली उपागम का उपयोग किया जाता है। शिक्षण कौशलों के विकास में भी इसका उपयोग किया जाता है।

viii) शैक्षिक अनुसन्धानकर्ताओं के लिए उपयोगी :-

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के द्वारा प्राप्त सूचना एवं आँकड़ों से शोधकार्य आसानी से हो सकता है। शोधार्थी को अपने प्रकरण से सम्बंधित विभिन्न प्रकार के शोध कम्प्यूटर व नेटवर्क के माध्यम से देखने को मिल सकते हैं जिससे उसे अपने कार्य को व्यवस्थित व क्रमबद्ध करने में आसानी हो जाती है।

ix) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के स्वरूप में परिवर्तन :-

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी द्वारा प्रदत्त साक्रिय वातावरण के द्वारा वर्तमान समय में शिक्षक केवल ज्ञान ही प्रदान नहीं करता अपितु एक पथ प्रदर्शक व मार्गदर्शक की भूमिका भी अदा करता है और शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में भी सहायता करता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी ने एक नया आयाम प्रदान किया है। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में इसका अपूर्व योगदान है। आज सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी द्वारा ही सम्पूर्ण कार्य शैली एवं संगठन में अभूतपूर्व विकास हुआ है।

इसी सन्दर्भ में श्रीमती आ० के० शर्मा ने लिखा है कि "विद्यालय व्यवस्था में शैक्षिक संगठन का छात्र के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण सम्बंध होता है जो कि सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के माध्यम से सरलतापूर्वक विकसित किया जा सकता है जिसके माध्यम से शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति सरलता से हो जाती है। छात्र के सर्वांगीण विकास में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं होती जिसका श्रेय सम्प्रेषण के साधनों को जाता है।"

Q.2 Define Research and describe the utility and limitation of observation method.

शोध को परिभाषित करें एवं प्रेक्षण विधि की उपयोगिता एवं परिसीमाएं बतायें।

Ans:-

RESEARCH :-

अनुसंधान मानव को प्रकृति की ओर ले जाने में एक आवश्यक तथा शक्तिशाली उपकरण सिद्ध हुआ है। क्रमबद्ध अनुसंधान के अभाव में आज की प्रगति हमलोग देखते हैं वह कभी भी सम्भव नहीं हो सकती थी।

हमारे सांस्कृतिक विकास का गुप्त रहस्य अनुसंधान में निहित है। अनुसंधान नए सत्यों की खोज द्वारा अज्ञानता के क्षेत्रों को समाप्त कर देता है और सत्य हमे कार्य करने की श्रेष्ठतर विधियों तथा उत्तम परिणाम प्रदान करते हैं।

MEANING OF RESEARCH :-

अंग्रेजी भाषा के Research शब्द का हिन्दी रूपान्तरण शोध, अनुसंधान, गवेषण, अन्वेषण, खोज आदि शब्दों में किया जाता है। लेकिन शोध शब्द अधिक सही माना जाता है। Research शब्द वास्तव में फ्रांसीसी भाषा के Recherche शब्द से बना है जिसका अर्थ है देखना (To look) या खोज करना (To investigate) आदि है। इस दृष्टिकोण से शोध का अर्थ हुआ नए ज्ञान की खोज करना।

"Research is formal, systematic and Intensive Process of carrying on the scientific method of analysis."

DEFINITION

" शोध का तात्पर्य किसी क्षेत्र में ज्ञान का पुष्टिकरण के लिए किया गया वास्तविक अनुसंधान है।"

" Research refers to systematic investigation in persuing of knowledge or conformation in any field."

— ड्रेवर

" शोध एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिसके द्वारा नए तथ्यों की खोज तथा पुराने तथ्यों की पुष्टि की जाती है और उनके अनुक्रम, परस्पर सम्बंधो कारणात्मक व्याख्याओ एवं प्राकृतिक नियमों जो उन्हे संचालित करते है, का अध्ययन किया जाता है।"

" Research may be defined as the systematic method of discovering new facts or verifying old facts, their sequence, interrelationship, causal explanation and the natural laws which given them."

— पी० वी० यंग

TYPES OF RESEARCH :-

i). Fundamental Research / Pure Research

ii). Applied Research

i). Fundamental Research :-

"शुद्ध/मौलिक शोध का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या करना, समझना तथा अर्जन करना है।" इसका मुख्य आधार जिज्ञासा है। शोधकर्ता अपनी जि- -ज्ञासा की संतुष्टि के लिए इस प्रकार का शोध करता है।

ii). Applied Research :-

व्यवहारपरक शोध समाज को कोई विशेष लाभ देने के लिए किया जाता है। जहाँ शोधकर्ता का उद्देश्य कि- -सी व्यवहारिक समस्या का समाधान करना होता है।

उक्त दो शोध वर्गीकरण के अलावे भी कई प्रकार के शोध होते हैं :-

- Historical Research (ऐतिहासिक शोध)
- Descriptive Research (विवरणात्मक शोध)
- Survey Research (सर्वेक्षण शोध)
- Ex-Post Facto Research (प्रतिगामी शोध)
- Experimental Research (प्रयोगात्मक शोध)

OBSERVATION METHOD की उपयोगिता :-

- बालकों का उचित दिशा में विभाजन :-
  कक्षा और खेल के मैदान में बालकों के सामान्य व्यवहार, सामाजिक सम्बंधो और जन्मजात गुणो का निरिक्षण करके उनको उचित दिशा में विकास किया जा सकता है।

- शिक्षा, उद्देश्यों, पाठ्यक्रम आदि में परिवर्तन :- स्कूल में शिक्षक, निरीक्षक, प्रशासक समय की मांगों और समाज के हालात को observe करके शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण विधि एवं पाठ्यक्रम आदि में परिवर्तन करते है।

- इस विधि के द्वारा एक साथ ही कई लोगों तथा कई प्रकार के व्यवहार का अध्ययन सम्भव हो सकता है। किसी भी व्यक्ति, पशु, पक्षी, पेड़, पौधे के व्यवहार का अध्ययन सरलता से किया जा सकता है।

LIMITATION OF OBSERVATION METHOD

- Trained observer observation के लिए प्रशिक्षित निरीक्षकों की जरूरत होती है, इसके अभाव में निरीक्षण सही ढंग से नहीं हो पाता है।
- निरीक्षण द्वारा बालकों के सभी व्यवहार व व्यक्तित्व की जाँच सम्भव नहीं व्यवहार और व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष का आंकलन इस विधि द्वारा असम्भव है।
- आत्मनिष्ठा सम्बंधी दोष :- यह दोष subjectivity को लेकर होता है, जब हम निरीक्षण के द्वारा दूसरे के व्यवहार को प्रकट करने की कोशिश करते है तो उसमें हमारी स्वयं की भावनाएं, विचार और दृष्टिकोण का अंश दिखाई देता है।

- **पक्षपात दृष्टि :-**

केवल आत्मनिष्ठा ही नहीं हमारी पक्षपात दृष्टि भी हमारी निरीक्षण के परिणामों को अपने विशेष रंगों में रंगने का प्रयत्न करती है। हमे अपने प्रियजनो में कोई भी दोष नजर नहीं आते जब की जिनसे हमारी कुछ भी खटपट हो उनमे सदैव हम कोई न कोई दोष निकालना चाहते है अथवा उनके बारे में बहुत संदेह हमारे अंदर विद्यमान होती है।

- **विश्वासनियता एवं यर्थाथता का अभाव :-**

इस विधि द्वारा किसी व्यक्ति के External behave का निरीक्षण कर उसकी मानसिक प्रक्रियाओं और व्यक्तित्व के बारे में कुछ जानने का प्रयास किया जाता है। परंतु इस प्रयास में कुछ विशेष बल दिखाई नहीं देता है। निरीक्षण का ढंग कितना ही अच्छा क्यों न हो दूसरे व्यक्ति के मन और मस्तिष्क में क्या हो रहा है, ये हम नहीं जान सकते है।

Ex:- एक बुरा व्यक्ति अपने भावो को छिपाकर अपनी ऊपरी व्यवहार से अपने आप को अच्छा साबित कर सकता है जब कि एक अच्छा आदमी अपने Informal एवं स्पष्ट व्यवहार के कारण मुर्ख ठहराया जा सकता है।

(04)

B+ NAAC 1st Cycle

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
Mathurapur, Samastipur
Recognized by ERC, NCTE, Bhubaneswar
Affiliated to L. N. Mithila University, Darbhanga

Assignment

Course Code: COURSE-1

Course Title: CHILDHOOD AND GROWING UP

Session: 2022-24

18/20

Submitted By:

Roll Number: 220032
Name: TUNJI PRAKASH
Class: B.Ed PART ONE
Uni. /BSEB Roll (If):
Year: 2023
Section: A

12.6.23

Date of Submission: 19-04-2023

Signature of Teacher/ In charge:

1. What is the meaning of gifted children? How identity gifted children?
प्रतिभाशाली बालकों का क्या अर्थ है? प्रतिभाशाली बालकों की पहचान कैसे करेंगे?

2. What Naturalistic observation? Discuss the limitations of naturalistic observation.
स्वाभाविक परीक्षण से क्या अभिप्राय है? स्वाभाविक परीक्षण की सीमाओं की चर्चा करें।

Q.1 What is the meaning of gifted children? How identity gifted children?

प्रतिभाशाली बालकों का क्या अर्थ है? प्रतिभाशाली बालकों की पहचान कैसे करेंगे?

Ans:-

बौद्धिक दृष्टि से जो बालक किसी नए ज्ञान को शीघ्रता से सीखने की क्षमता रखते हैं, उन्हें प्रतिभाशाली बालक कहा जाता है। इन बालकों की बुद्धि लब्धि (IQ) 120 से अधिक होती है। यह बालक शारीरिक, संवेगात्मक आदि कई दृष्टियों से अन्य बालकों से अलग होता है।

"प्रतिभाशाली बालक शारीरिक गठन, सामाजिक समायोजन व्यक्तित्व के गुणों, विद्यालय, उपलब्धि, खेल की सूचनाओं और रुचियों की विविधता में औसत बालकों से श्रेष्ठ होते हैं।"

— टरमैन एव ओडन

"प्रतिभाशाली शब्द उस प्रत्येक बालक के लिए प्रयोग किया जाता है जो अपनी आयु वर्ग में किसी विशेष योग्यता में श्रेष्ठ होता है और जो योग्यता उसे समाज में जीवन के स्तर को उठाने के लिए विशेष योगदान देने वाला बता देती है।"

— W.B. Kolesnik

"एक योग्य और प्रतिभाशाली बालक वह है जो लगातार उच्च स्तर का कार्य निष्पादन किसी भी सामान्य प्रयास के क्षेत्र में प्रदर्शित करता है।

— National society for the study of Education.

वर्तमान समय में प्रतिभा संपन्नता (Giftedness) के सम्बंध में दो प्रमुख विचार धाराएं हैं—

I. परम्परागत विचार धारा
II. आधुनिक विचार धारा

I. परम्परागत विचार धारा :-

इसके अनुसार प्रतिभा का मूल्यांकन केवल बुद्धिलब्धि के स्तर के सन्दर्भ में किया जाता है। यह कम विश्वसनीय है। यह व्यक्तित्व के केवल एक पक्ष (बुद्धिलब्धि स्तर) को महत्त्व देती है।

II. आधुनिक विचार धारा :-

- प्रतिभा सम्पन्नता बहुआयामी होती है।
- सतत व निरन्तर रेखा द्वारा प्रदर्शित की जा सकती है। इसे सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता।
- इसको पर्याप्त निर्देशन के द्वारा सम्पोषित एवं विकसित किया जा सकता है।
  - ↳ शारीरिक विशेषताएँ
  - ↳ संवेगात्मक विशेषताएँ
  - ↳ सामाजिक विशेषताएँ
  - ↳ लिंग विशेषताएँ
  - ↳ शैक्षणिक उपलब्धि
  - ↳ व्यक्तिगत विशेषताएँ
  - ↳ सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

$$\text{बुद्धिलब्धि (IQ)} = \frac{\text{मानसिक आयु (Mental Age)}}{\text{शारीरिक आयु (Chronological Age)}} \times 100$$

CHARACTERISTICS OF THE GIFTED CHILDREN :-

- इनकी पढ़ने लिखने में अधिक रुचि होती है।
- इनका शब्द भंडार व्यापक होता है।
- ये कठिन विषयों में रुचि लेते हैं।
- इनकी ज्ञानेन्द्रियों का विकास तीव्र गति से होता है।
- इनमें मानसिक क्रियाओं जैसे अवधान, निरीक्षण, प्रत्यक्षीकरण, प्रत्ययीकरण, कल्पना, तर्क, चिन्तन, निर्णय, व स्मरण करने की क्षमता अधिक तीव्र होती है।
- इनका सामान्य ज्ञान अधिक अच्छा होता है।
- ये अद्भुत विषयों में अधिक रुचि लेते हैं।
- ये समस्याओं का समाधान शीघ्र कर लेते हैं।
- इनमें बौद्धिक नेतृत्व के गुण होते हैं।
- ये विद्यालयी परीक्षाओं में अधिक अंक पाते हैं।
- बुद्धि परीक्षाओं में इनके अँक अधिक होते हैं।
- इनके क्रियाकलापों में विभिन्नतायें पाई जाती हैं।
- ये अपना विद्यालयी कार्य तथा गृह कार्य शीघ्रता से कर लेते हैं।

IDENTIFICATION OF GIFTED CHILDREN
(प्रतिभाशाली बालकों की पहचान) :—

प्रत्येक विद्यालय में विभिन्न प्रकार के बालक होते हैं। उनके व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर प्रतिभाशाली बालकों का चयन करना अध्यापक के लिए एक चुनौती है। किसी भी देश में शिक्षा की पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ तथा विभिन्न प्रकार की शिक्षण प्रक्रियाओं में बालकों के बौद्धिक स्तर को सामने रखा जाता है। बालकों के बौद्धिक पहचान के लिए निम्नलिखित प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है :—

- बुद्धि परीक्षाएँ (Intelligent test)
- प्रवीणता परीक्षण
- साक्षात्कार (Interview)
- उपलब्धि परीक्षण (Achivement Test)
- अभिक्षमता परीक्षण (Aptitude Test)
- सृजनशीलता परीक्षण (Creativity Test)

(a)

Q.2. What Naturalistic observation? Discuss the limitations of naturalistic.
स्वभाविक परीक्षण से क्या अभिप्राय है? स्वाभाविक परीक्षण की सीमाओं की चर्चा करें।

Ans:-

विज्ञान में किसी भी समस्या का एक उत्तम एवं वैज्ञानिक उत्तर खोजने के लिए यह आवश्यक है कि Researcher के पास शोध समस्या के बारे में आँकड़े संग्रह के लिए उपयुक्त विधि है।

यदि विधि अयुक्त ना होगी तो शोध करता समस्या के बारे में सही से आँकड़ा संग्रह नहीं कर पायेंगे और उस समस्या का सही उत्तर भी नहीं खोज पायेंगे। मनोविज्ञान, शिक्षा तथा समाज शास्त्र में शोध समस्याओं का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करने के लिए तथा उससे सम्बंधित महत्वपूर्ण तथ्य एवं आँकड़े संग्रह करने के लिए कुछ खास-खास विधि का प्रयोग किया गया है:-

I. OBSERVATION METHOD / NATURALISTIC OBSERVATION
II. INTERVIEW METHOD
III. QUESTIONNAIR METHOD
IV. CASE STUDY METHOD
V. RATING SCALE METHOD

NATURALISTIC OBSERVATION / OBSERVATION METHOD:-

निरीक्षण शब्द का प्रयोग हम विज्ञान विषयों में organs के द्वारा वस्तुओं की प्रकृति अथवा वातावरण सम्बंधी जानकारी और ज्ञान प्राप्त करने के लिए करते है।

मनोविज्ञान के क्षेत्र में इसका प्रयोग बाह्य व्यवहार का परीक्षण कर उसकी मानसिक क्रियाओं और व्यक्तित्व के सम्बंध आंतरिक विशेषताओं का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है। निरीक्षण का अर्थ होता है ध्यान पूर्वक देखना।

हम किसी व्यक्ति के व्यवहार, आचरन क्रियाओं प्रतिक्रियाओं आदि को ध्यान पूर्वक देखकर उसकी मानसिक दशा का अनुमान लगा सकते हैं, जैसे यदि कोई व्यक्ति जोड़-जोड़ से बोल रहा हो और उसकी आँखे लाल है तो हम जान सकते हैं कि वो गुस्से में हैं।

Naturalistic observation के रूप :-

1. FORMAL OBSERVATION
2. INFORMAL OBSERVATION
3. PARTICIPANTE OBSERVATION
4. NON PARTICIPANTE OBSERVATION

FORMAL OBSERVATION :-

यह Observation पूरी तरह से formal रूप से हो सकती है observer को जिनके व्यवहार का observation कार्य करना है उन्हे पहले से ही सूचना दे दी जाती है कि observation कार्य कब और कहाँ होना है और किन-किन बातो का observation होना है।

यह एक Hostel में रहने वाले छात्रों को यह बता दिया जाता है की इस दिन इस समय तथा किन बातो का observation किया जाना है। बालक उस उस दिन, उस समय अपने पर खास ध्यान देगा, एक लापरवाह बालक स्वच्छ रह कर अपनी जगह अच्छा

बना सकता है यह व्यवहार स्वभाविक और वास्तविक नहीं।

INFORMAL OBSERVATION :-

यह शिक्षक के लिए अधिक उपयोगी है उसी कक्षा में या कक्षा से बाहर अपने छात्रों के व्यवहार का observation करने के अनेक अवसर प्राप्त होते है। इसमें पता नहीं होता कि observation कब करना है किस रूप में करना है इसका कोई formal रूप में system या Time Table तय नहीं किया जाता है।

जहाँ जिस प्रकार का व्यवहार घटित हो रहा है उसी रूप में observation होता है कोई बालक खेल के रूप में किस तरह व्यवहार कर रहा था, situation पर कैसा व्यवहार था इस प्रकार के व्यवहार में किया गया observation Informal observation कहलाता है।

PARTICIPANTE OBSERVATION :-

इस प्रकार के observation में observer व्यक्तियों के समूह का एक अंग बनकर अनेक व्यवहार व व्यक्तित्व के गुण की जानकारी एकत्रित करने की प्रयत्न करता है। Ex:- वह बालक के खेल में शामिल होकर उस समय के व्यवहार की जाँच का कार्य कर सकता है। इसमें दोष यह है कि बालक अध्यापक जाँच करता की उपस्थिति में पुरी तरह सहज और स्वभाविक व्यवहार नहीं करते।

NON PARTICIPANTE OBSERVATION :-

इस प्रकार के observation में निरीक्षण कर्ता व्यक्ति विशेष के क्रियाओं एवं व्यवहार ओट से अपने आप को छुपा कर observe करता है, उन्हे पता नहीं चलने

किया जाता है कि उनके व्यवहार किस रूप में observe किये जा रहे हैं इस कार्य के लिए निरीक्षणकर्ता किसी उचित स्थान का चुनाव कर अपना observation कार्य करता है वे नहीं देख सके।

इसके अंतर्गत आधुनिक उपकरणों जैसे - गुप्त कैमरा, video recording, audio recording आदि का प्रबंध भी इस प्रकार के गुप्त observation में किया जाता है। दूर बैठ कर देखने के लिए observation (observer) Telescope आदि का भी प्रयोग किया जा सकता है।

LIMITATIONS OF NATURALISTIC OBSERVATION:-

- Trained observer observation के लिए प्रशि-क्षित निरीक्षकों की जरूरत होती है इसके अभाव में निरीक्षण सही ढंग से नहीं हो पाता है।
- निरीक्षण द्वारा बालकों के सभी व्यवहार व व्यक्तित्व की जाँच सम्भव नहीं व्यवहार और व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष का आंकलन इस विधि द्वारा असम्भव है।
- आत्मनिष्ठा सम्बंधी दोष subjectivity को लेकर होता है, जब हम निरीक्षण के द्वारा दूसरे के व्यवहार को प्रकट करने की कोशिश करते हैं तो उसमें हमारी स्वयं की भावनाएं, विचार और दृष्टिकोण का अंश दिखाई देता है।
- पक्षपात दृष्टि केवल आत्मनिष्ठा ही नहीं हमारी निरीक्षण के परिणामों को अपने विशेष रंग में रंगने का प्रयत्न करती है। हमें अपने प्रियजनों में कोई भी दोष नजर नहीं आते जब की जिनसे हमारी कुछ भी खटपट हो उनमें सर्दैव दोष निकालना चाहते हैं।

- विश्वसनीयता एवं वस्तुगतता का अभाव द्वारा किसी व्यक्ति के External behave का निरीक्षण कर उसकी मानसिक प्रक्रियाओं और व्यक्तित्व के बारे में कुछ जानने का प्रयास किया जाता है, परंतु इस प्रयास में कुछ विशेष बल दिखाई नहीं देता है।

निरीक्षण का ढंग कितना ही अच्छा क्यों न हो दूसरे व्यक्ति के मन और मस्तिष्क में क्या हो रहा है, ये हम नहीं जान सकते हैं। Example:-

एक बुरा व्यक्ति अपने भावों को छिपा-कर अपनी ऊपरी व्यवहार से अपने आप को अच्छा साबित कर सकता है जब कि एक अच्छा आदमी अपने Informal एवं स्पष्ट व्यवहार के कारण मूर्ख ठहराया जा सकता है।

9